T. D. C – 'I'

Psy – 2nd Paper

Date / Page

PANIC DISORDER भीषिका विकृति

भीषिका विकृति चिंता विकृति का एक प्रमुख प्रकार है। भीषिका विकृति मे अचानक एक अव्याख्येय (inexplicable) भीषिका या आतंक (Panic) का दौरा पड़ता है। जब रोगी को इस तरह का अप्रत्याशित भीषिका दौरा बार-बार अर्थात हप्ता मे दो या दो से अधिक बार अवश्य पड़ता है, तो इसे DSM-IV (TR) मे भीषिका विकृति कहा जाता है। इस तरह से भीषिका विकृति में अप्रत्याशित बारंबार भीषिका दौरा (Panic attack) होता है।

भीषिका दौरा को DSM-IV (TR) में कुछ प्रमुख दैहिक संवेदनाओ के रूप में परिभाषित किया गया है। इन दैहिक संवेदनाओ मे यदि कम से कम चार दैहिक संवेदना भी कोई व्यक्ति अनुभव करता है तो इसे भीषिका दौरा कहा जायेगा। दैहिक संवेदना इस प्रकार है–

(I) हृदय गति का तीव्र या कम होना
(II) पसीना आना
(III) मांसपेशियो मे कंपन उत्पन होना
(IV) सांस की गति रूकने या मंद होने का अनुभव होना
(V) छाती मे दर्द या तकलीफ होना
(VI) दम घुटने का अनुभव होना
(VII) पेट मे दर्द होना तथा मिचली आने का अनुभव करना
(VIII) बेहोश होना या चक्कर आने का अनुभव करना
(IX) अवास्तविकता या अपने आप से अलग होने का अनुभव होना
(X) अपने आप पर नियंत्रण खोने का डर या सनकी होना
(XI) मरने का डर होना
(XII) सुन्न या झुनझुनी संवेदना का होना
(XIII) कपकपी या अत्यधिक गर्मी का अनुभव होना

स्पष्ट हुआ की भीषिका दौरा को न केवल दैहिक और सांवेगिक लक्षण है बल्कि इसके कुछ संज्ञानात्मक लक्षण भी है। रोगी को यह अनुभव होना

FREEMIND
Date
Page

की अब वह जल्दी मरने वाला है या अब इसका अपने पे नियंत्रण नही है। या सनकी महसूस होना आदी संज्ञानात्मक लक्षण है।

भीषिका दौरा सप्ताह मे एक या दो बार से कम अवश्य होता है और दौरा आने पर लगभग कुछ मिनटो तक अवश्य बना रहता है तो कभी-कभी घंटो तक बना रहता है। भीषिका दौरा सांकेतिक तथा असांकेतिक दोनो ही तरह का होता है। सांकेतिक भीषिका दौरा कई विशेश परिस्थिति या उद्दीपक से संबंधित होता है और जब वह व्यक्ति को इस उद्दीपक या परिस्थित से सामना होता है इसमे दौरा पडता है। ऐसी परिस्थित में तब मनश्चिकित्सक इसमे दुर्भीति (Fobia) रोग उत्पन हो जाने का अनुमान लगाते है। भीषिका दौरा प्रत्याशित ढंग से होता है और किसी वस्तु या परिस्थित से संबध नही होता। जब भीषिका दौरा अप्रत्याशित एवं बार-बार होता है तो समझा जाता है कि व्यक्ति मे भीषिका विकृति (Panic disorder) विकसित हो गई है। मेयर्स तथा उनके सहयोगीयो के अध्यन के अनुसार भीषिका विकृति का डर पुरूषो मे (0.7%) होता है। तथा महिलाओ मे (1.0%) होता है। पोलार्ड, पोलार्ड एवं कार्न के अनुसार इस विकृति की शुरूआत आरंभिक वयस्कावस्था (Early adulthood) मे होता है तथा इसका संबध तनावपूर्ण जीवन की अनुभूतियो से होता है।

Etiology of Panic disorder :-
विभीषिका विकृति के हेतुकी :-

विभीषिका विकृति के कई कारण बतलाए गये है जिन्हे मोटे तौर पर निम्नांकित दो प्रमुख भागो में बाटा गया है -

(i) जैविक कारक - Biological factor
(ii) मनोवैज्ञानिक कारक Psychological factor

(i) **Biological factor :-** अध्ययनो से पता चलता है, कि विभीषिका विकृति उन व्यक्तियो मे जल्दी होता है, जिनके परिवार के किसी सदस्य को पहले हो चूका है। Torgersen (1983)

के अनुसार विभिषीका विकृति की सुसंगता दर एकांडी, जुड़वा मे भ्रामीय जुड़वा बच्चे की अपेक्षा काफी अधिक होता है। इनके अध्यन के अनुसार यदि एकांडी जुडवा युग्म मे से एक बच्चा विभिषीका विकृति होती है तो दुसरा ऐसे बच्चे मे होने की संभावना 31% बढ जाती है। परंतु भ्रातीय जुडवा युग्म मे से यदि कोई एक को विभिषीका विकृति होती है तो युग्म के दुसरे बच्चे में इस विकृति के होने की कई संभावना नही के बराबर रहती हैं। इससे स्पष्ट पता चलता है कि विभीषिका विकृति एक अनुवांशिक आधार होता है।

2. **Psychological factor** :- विभीषिका विकृति के कुछ मनोवैज्ञानिक कारण भी है। क्लार्क के अध्यन के अनुसार विभीषिका विकृति उत्पन होने का कारण यह है कि व्यक्ति अपने भीतर उत्पन्न शारीरिक संवेदनाओ का अनर्थकर भ्रांतिपूर्ण व्याख्या करता है। विभीषिका विकृति वाले व्यक्ति समान्य चिंता अनुक्रियाओ जैसे तीव्र हृदय गति, दम फूलने की स्थित तथा चक्कर आने की स्थित मान लेता है कि विभीषिका दौरा पडने वाला है। जबकि वास्तविकता यह होता है कि यह अन्य कारको से उससे होता है। ऐसी भ्रांतिपूर्ण व्याख्या से व्यक्ति मे परेशानी और बढ जाती है और अन्तोगत्वा उसमे पूर्ण रूप से विभीषिका विकृति उत्पन हो जाती है।

अध्यनो से यह भी पता चला है कि विभीषिका विकृति के रोगी में इस बात का काफी डर रहता है कि उन्हे विभीषिका दौरा कही आम जगह या स्थान पे पड जाये तो वह अपने आप पे नियंत्रण नही रख पायेगा

स्पष्ट हुआ कि विभीषिका विकृति की उत्पति में प्रत्याक्षिक नियंत्रणो का प्रर्याप्त महत्व है तथा संज्ञानात्मक कारको की सराहनीय भूमिका है।